पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.) 05/0084/09-11 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

❖❖❖

डॉ. अशोक कु. चौहान

संस्थापक अध्यक्ष

ऐमिटी शिक्षण संस्थान

नई दिल्ली

वर्ष-*28* अंक-*04* श्रावण-*2068* दयानन्दाब्द *188* *16* जुलाई से *31* जुलाई *2011* (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ *4* वार्षिक शुल्क *48* रु.

Website : www.aryayuvakparishad.com aryayouthgroup@yahoogroups.com E-mail : aryayouth@gmail.com

॥ ओ३म् ॥

यदि आप आर्य युवा शक्ति की कार्यप्रगति की एक झलक देखना चाहते हैं तो अवश्य पधारें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 33वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन

ओ३म् बलमुपास्व

सानिध्य : स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज व स्वामी आर्यवेश जी ❖ अध्यक्षता: आर्यनेता डॉ. अशोक कुमार चौहान

विराट् आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार, 4 सितम्बर 2011, प्रातः 10.30 से 5.00 बजे तक

स्थान : आर्य समाज, दीवान हाल, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

विशेष आकर्षण

- ❖ राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं में आर्य समाज की भूमिका पर विचार
- ❖ देश भर के चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम
- ❖ केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के भावी कार्यक्रम पर विचार
- ❖ आगामी राष्ट्रीय कार्यकारिणी व प्रान्तीय अध्यक्षों की नियुक्ति की घोषणा

यज्ञ : प्रातः 8.30 से 9.30 तक, अल्पाहार 9.30 से 10.30 तक, ऋषि लंगर 1 से 2 तक

आर्य समाज में उत्साह व जोश की एक नई लहर पैदा करने के लिए

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

: निवेदक :

डॉ.अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	विश्वनाथ आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामन्त्री	सत्यभूषण आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	रामकुमार सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	देवेन्द्र भगत प्रैस सचिव	कृष्णचन्द पाहूजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
राकेश भटनागर राष्ट्रीय मन्त्री	मनोहरलाल चावला राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	वीरेन्द्र योगाचार्य राष्ट्रीय मन्त्री
दुर्गेश आर्य वरिष्ठ मंत्री	आनन्दप्रकाश आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	प्रवीण आर्य राष्ट्रीय मन्त्री

: स्वागत समिति :

कृष्णगोपाल दीवान	आनन्द चौहान
डॉ.रविकान्त	दर्शन अग्निहोत्री
चौ.लक्ष्मीचंद	दीपक भारद्वाज
मायाप्रकाश त्यागी	राजीवकुमार परम
सुरेन्द्र गुप्ता	डॉ.सुन्दरलाल कथुरिया
कै.अशोक गुलाटी	डॉ.डी.के.गर्ग
शशिभूषण मल्होत्रा	डॉ.वीरपाल विद्यालंकार
कान्तिप्रकाश आर्य	हीरालाल चावला
के. एल. पुरी	रामकृष्ण सतीजा
रविन्द्र मेहता	जितेन्द्र डावर
जितेन्द्र नरूला	डॉ. ओमप्रकाश मान
सत्यानन्द आर्य	रवि चड्डा
सुरेश मुखिजा	धर्मपाल सिब्बल

प्रबन्ध समिति : सर्वश्री कृष्णपाल सिंह, शंकरदेव आर्य, संतोष शास्त्री, सुरेश आर्य, ओमबीर सिंह, नीता खन्ना, प्रभा सेठी, अर्चना पुष्करणा, श्रीकान्त शास्त्री कृष्णलाल राणा,जीवनप्रकाश शास्त्री, दिनेश आर्य, श्रीकृष्ण दहिया, गवेन्द्र शास्त्री, रामकृष्ण शास्त्री, मनोज शास्त्री, जितेन्द्रसिंह आर्य, डॉ. मुकेश सुधीर, ईश आर्य, विनय चावला, स्वतंत्र कुकरेजा, बलजीतसिंह आर्य, चत्तरसिंह नागर, जगदीश मलिक, कृष्णप्रसाद कौटिल्य, यज्ञवीर चौहान, योगेन्द्र आर्य, अरूण आर्य, सौरव गुप्ता

केन्द्रीय कार्यालय : **आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-7** दूरभाष : 9810117464, 9013137070

हमें ईश्वर को क्यों मानना चाहिए और ईश्वर के मानने से हमें जीवन में क्या-क्या लाभ होता है?

आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, जी.एच. 8, फ्लैट नं. 164, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-87, मो. 9871020844

इस प्रश्न पर विचार करते समय सर्वप्रथम यह जानना चाहिए कि क्या ईश्वर की सत्ता इस संसार में है? यदि ईश्वर की सत्ता इस संसार में है तो हमें ईश्वर के मानने से जीवन में क्या-क्या लाभ हैं?

1. सृष्टि में ईश्वर की सत्ता : यह जो सृष्टि हमें दिखाई देती है, यह प्रारम्भ से ही ऐसी थी, जैसी आज दिखाई दे रही है? नहीं, यह सृष्टि प्रारंभ में ऐसी नहीं थी। इसमें निरंतर परिवर्तन हो रहा है। इस सृष्टि में हो रहे परिवर्तन को करने वाली सत्ता का नाम ईश्वर है।

2. सृष्टि का नियामक ईश्वर : इस सृष्टि में नियम की एक गति है। सृष्टि की गति नियमबद्ध है और सृष्टि के नियमों का नियामक ईश्वर है। सृष्टि अपने प्रवाह से अनादि है। इस सृष्टि को अपने अनन्त सामर्थ्य से नियम में बांधना ईश्वर की महान शक्ति का परिचायक है।

3. सृष्टि का कार्य-कारण सिद्धान्त : सृष्टि में सृष्टि-कारण का सिद्धान्त व्याप्त है। हर कार्य का कारण अवश्य बना है। बिना कारण के कार्य की सत्ता नहीं हो सकती। छोटे से छोटा कार्य का भी कारण होता है। उस कार्य और कारण के साथ एक चेतन सत्ता होती है, जो प्रत्येक कारण को कार्यावस्था में परिवर्तित करती है। उस चेतन सत्ता ईश्वर ने अपनी सर्व व्यापकता से कारणरूप मूल प्रकृति को कार्यरूप (दृश्य जगत्) में परिणत किया है।

4. सृष्टि की क्रियाओं का साक्षी ईश्वर : सृष्टि की छोटी से लेकर बड़ी से बड़ी समस्त क्रियाओं का साक्षी स्वयं ईश्वर है। हर क्रिया उसकी नजर में है। उसे कोई धोखा नहीं दे सकता। उससे छिपकर कोई भी क्रिया नहीं हो सकती है।

5. सृष्टि का नियन्ता ईश्वर : इस सृष्टि का नियन्ता ईश्वर है। बिना नियन्ता के कुछ भी संभव नहीं है। वह नियन्ता ईश्वर सृष्टि को कारण से कार्य में बदलता है और नियंत्रण में भी रखता है। उसके नियंत्रण से बाहर कोई गति संभव नहीं है।

6. सृष्टि का स्वामी ईश्वर : वह ईश्वर सृष्टि का स्वामी, संरक्षक, पालक और पोषक है। वह सृष्टिकर्ता, भर्ता, धाता और संहर्ता है। वह सृष्टि को बनाता है। रक्षण करता है और प्रलयकर्ता है। यह तीनों गुण सिवाय ईश्वर के और किसी में भी नहीं हो सकते हैं। इसलिए यह सृष्टि का स्वामी है।

7. सृष्टि यज्ञ का प्रजापति ईश्वर : इस सृष्टिरूपी यज्ञ का प्रजापति ईश्वर है। उस प्रजापति परमात्मा ने ही सृष्टि में समस्त निर्माण और रचना आदि क्रियाओं का संचालन किया। इस सृष्टि के हम सब जीव उस प्रजापति की प्रजा हैं। वह हम सब प्रजा का प्रजापति है। उसी प्रजापति ने अपने अनन्त सामर्थ्य से सब प्रजाओं के शरीर की संरचना की है।

8. सृष्टि की प्रजा का प्राणदाता ईश्वर : सृष्टि की समस्त प्रजा के शरीरों को सुन्दर रचना करके उसे प्राणदाता प्रभु ने सब सुन्दर शरीरों में प्राण की प्रतिष्ठा की है। प्राण न होते तो सब जीवों के सुन्दर शरीर जीवन रहित होते अर्थात् निष्प्राण जीवन गतिहीन होकर केवल कलाकार की सुन्दर मूर्ति के समान होता।

हे मेरे प्राणदाता प्रभो! आपने हमें प्राण शक्ति देकर जीवन्त कर दिया है। जीवन की समस्त क्रियाओं का पोषक प्राण है। हंसना, बोलना, देखना, सुनना, खाना, पीना, चलना सब क्रियाओं का पोषक प्राण है। इस शरीर में प्राण, मन, बुद्धि और इन्द्रियों की संरचना परमेश्वर की महान कला का परिचय है।

9. सृष्टि का प्रथम कलाकार ईश्वर : सृष्टि का प्रथम कलाकार ईश्वर ही है। उसने ही अपनी कला से इस सृष्टि को सौंदर्यमय बनाया है। इस समस्त सौरमंडल की संरचना, विशालता और विचित्रता अद्भुत है। ग्रह, नक्षत्र, तारों का समूह आश्चर्यजनक है। पृथ्वी पर समुद्र में अपार जलराशि, हिम-आच्छादित पर्वतमालाएं, विविध रसों से परिपूर्ण वृक्ष और वनस्पति तथा फल आदि, रंग-बिरंगे सुगंधित फूल, नदी, सरोवर, झील और झरने आदि कितनी सुन्दर सजी यह अनुपम पृथ्वी प्रभु की प्रथम कला का परिचय है।

10. सृष्टि के प्रथम माता-पिता ईश्वर : ईश्वर सृष्टि के प्रथम माता-पिता। जो हिरण्यगर्भ रूप में समस्त लोक-लोकान्तरों और स्थावर एवं जंगम सहित सभी जीवों के जनक और जननी माने जाते हैं। जीवन की रचना, पालन-पोषण, आहार, दूध, रस, फल-फूल, मेवा आदि खाद्य पदार्थों को पृथ्वी पर देकर उस प्रभु ने अपने पुत्र-पुत्रियों पर अगणित उपकार किया है। संसार में माता-पिता जैसे संतान के सुख की निरन्तर कामना करते हैं और अपनी संतान को सुख के साधन देते हैं, उसी प्रकार मेरे प्रभु ने हम सब पर सृष्टि के सकल उत्तम पदार्थों को देकर असीम उपकार किया है। 'तुम्हीं हो माता, पिता हमारे, तुम्हें हो बंधु, सखा हमारे।

इन दस प्रमुख बिन्दुओं पर विचार करने से ईश्वर की परम सत्ता पर पूर्ण विश्वास हो जाता है। ईश्वर की सत्ता है। इस विवेचन को सामान्य जनों के लाभ के लिए सरल, सरस एवं सुबोध भाषा में लिखा है। प्रमाण के लिए वेद मंत्र और शास्त्रों के विविध प्रमाणों को इसलिए उद्धृत नहीं किया है। जिससे अति सामान्य जन-जीवन के परम लाभ और रहस्य से वंचित न रह जायें। एक बार जिज्ञासा और श्रद्धा का बीज हमारे हृदय में अंकुरित हो जाये तो अनेक शास्त्रों के प्रामाणिक वचन, विद्वानों की संगति और आध्यात्मिक सत्संग आदि सद्गुणों की शुभ प्रवृत्तियों से वट वृक्ष का रूप दिया जा सकता है।

जब हमारे हृदय में ईश्वर के प्रति विश्वास, श्रद्धा, निष्ठा और भक्ति भावना जागृत हो गई तो ईश्वर के बोध से जीवन में अनेक लाभ होते हैं।

1. कर्मपरायण जीवन—ईश्वर के बोध से जीवन कर्मपरायण हो जाता है। हम यह जानते हैं कि ईश्वर स्वयं कर्मशील और यह सुन्दर सृष्टि ईश्वर के कर्मों का दृश्य है। हम आलस्य प्रमाद और चिन्ता छोड़कर सदा कर्म करते हुए निष्काम भाव से जीवन यापन करें।

2. ज्ञानमय जीवन—ज्ञान ही ईश्वर की परमशक्ति है। ज्ञान ही ईश्वर तक पहुंचने का साधन है। स्वयं ज्ञानी बनें और दूसरों को ज्ञान देने का प्रयत्न करें। ज्ञान का प्रचार-प्रसार श्रेष्ठ कार्य है।

3. श्रद्धामय जीवन—ईश्वर भक्त वही है जो श्रद्धावान है। जिसमें अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों के प्रति श्रद्धा है। श्रद्धा से ही जीवन का नवनिर्माण होता है। श्रद्धा ही सच्ची भक्ति है।

4. आत्मशक्ति का विकास—ईश्वर भक्ति से आत्मबल और आत्मिक शक्ति का संवर्धन होता है। हम 'आत्मवान' बन जाते हैं। आत्मिक शक्ति ही सर्वोच्च शक्ति है। जो जीवन में उत्साह का संचार करके अकर्मण्ता और भीरूता को भगाकर दिव्यशक्ति अर्थात् निर्भयता और निडरता का भाव आ जाता है।

5. दिव्यगुणों की वृद्धि—ईश्वर की भक्ति से जीवन में दिव्य गुणों और दिव्य भावों की वृद्धि होती जाती है। जीवन में दिव्यता का प्रकाश आ जाता है। प्रेम, करुणा, सरलता, सौम्यता, सहिष्णुता, परोपकार, क्षमा, दान, पुण्य, उदार मन, प्रसन्नचित्त, योगाभ्यास, यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग, साधुजन मैत्री आदि दिव्यगुणों और दिव्यभावों का आगमन होने से जीवन समस्त दोषों, विकारों और दुर्गुणों से मुक्त होकर पवित्र, शुद्ध,निर्मल और तेजोमय देदीप्यमान हो जाता है।

6. शुभ कर्मों में प्रवृत्ति—ईश्वर भक्ति से शुभ कर्मों से निवृत्ति होती जाती है। यज्ञ, दान, पुण्य, सेवा आदि जितने भी शुभ कर्म हैं, उन शुभ कर्मों से जीवन उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है।

7. धर्म में अभिरुचि—ईश्वर की भक्ति से धर्म में अभिरुचि उत्पन्न होती है। धर्म ही जीवन को नियम में रखता है। धर्म के विविध गुणों को जीवन में अपनाने से जीवन का निमार्ण होता है। धर्म वह शक्ति है जो दूसरे मानवों के साथ हमारे जीवन को जोड़ती है। जीवन में लड़ाई, झगड़ा और हिंसा या हानि करना धर्म का कार्य नहीं है। धर्म ही ईश्वर के प्रेम की पाठशाला है।

8. नर सेवा नारायण सेवा—सच्चा ईश्वर भक्त दूसरों के साथ बन्धुत्व और भाईचारे का व्यवहार करता है। वह दूसरे असहाय और अनाथ लोगों की सेवा में अपना जीवन लगाता है। नर सेवा ही नारायण सेवा का सच्चा भाव है।

9. सबके सुख में अपना सुख—ईश्वर का भक्त सबके सुख मानता है। सब लोगों के सुख की कामना करता है। मन से हमेशा सबके कल्याण के लिए विचार करता है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' यह भाव मन में आना और ऐसा पाठ प्रतिदिन करना ईश्वर भक्ति का श्रेष्ठ गुण है।

10. समदर्शन का भाव—ईश्वर भक्ति से हृदय की विशालता और मन की पवित्रता बढ़ती है। हम सब प्राणी ईश्वर के पुत्र हैं। देश-विदेश, जाति-पांति, रूप-रंग, ऊंच-नीच, गरीब-अमीर का भेदभाव बेकार है। सब मेरे हैं। मैं सबका हूं। यह समदर्शन एवं समदृष्टि जीवन में आ जाती है।

संक्षिप्त रूप से ईश्वर भक्ति के विविध लाभों का वर्णन किया है। यदि इसका विस्तार से प्रमाण सहित विवेचन किया जाये तो एक पुस्तक का स्वरूप दिया जा सकता है।

आज के व्यस्ततम समय में थोड़े शब्दों में सारगर्भित और मार्मिक चिन्तन करना और लिखना ही श्रेयस्कर है।

कम शब्दों में गहनतम भावों और अन्तर्मुखी अवस्था की ओर उन्मुख करना ही इस लेख का अभिप्राय है। हम सब अपने जीवन में दिव्य कर्मों की साधना करते हुए उदान्त भावनाओं के साथ निष्काम कर्मयोगी बनकर संसार में जीवनयापन करें।

सृष्टि के सकल पदार्थ, समस्त सुख और यह जीवन प्रभु की अपार कृपा का परम प्रसाद है। मिलकर रहना, सबके कल्याण की कामना करना ही सच्ची ईश्वर भक्ति है।

यदि ईश्वर भक्ति करते हुए भी राग-द्वेष, कलह, निन्दा, अभिमान और अहंकार जीवन में बना रहे तो निश्चय ही ईश्वर भक्ति के मार्ग से हम बहुत दूर हैं।

अधिक भोगों की कामना करना ही अपने को दुखी बनाना है। सृष्टि के सब भोग और पदार्थ यहीं पर हैं। भोगों और पदार्थों की आयु बहुत बड़ी है। हमारा जीवन बहुत छोटा है। सृष्टि में प्रतिदिन प्राणी जन्म और मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। दिन-दिन जीवन घट रहा है।

आओ, हम सब मिलकर अपने जीवन को भोग और रोग से बचाकर योगमय, भक्तिमय, ज्ञानमय और सुखमय बनायें।

श्री सेवाराम पटेल मध्य भारतीय सभा के प्रधान निर्वाचित

ग्वालियर। दिनांक 29 मई 2011 को मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन आर्य समाज सुरेशनगर, ग्वालियर के सभागार में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी के पर्यवेक्षण में निर्वाचन अधिकारी श्री दाहिमा आई.ए.एस. सेवानिवृत सचिव, मध्य प्रदेश शासन की देखरेख में त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ। इस निर्वाचन में प्रदेश भर से 102 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें सर्वसम्मति से **प्रधान**–श्री सेवाराम पटेल, **मन्त्री**–डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, **कोषाध्यक्ष**–श्री सी.एल. खरे सहित छः **उपप्रधान**, छः **उपमंत्री**, **भूसम्पत्ति अधिष्ठाता**–आर्य वीर दल अधिष्ठाता, **पुस्तकालयाध्यक्ष** एवं 15 अंतरंग सदस्यों का निवार्चन सम्पन्न हुआ।

श्री राम आर्य बंगाल सभा के प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक 19 जून, 2011 को आर्य समाज मंदिर, 19, विधान सरणी, कोलकाता के ऐतिहासिक सभागार में सम्पन्न हुआ। सभा के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये–

1. श्रीराम आर्य–**प्रधान**, श्री रामसागर सिंह–**उपप्रधान**, श्री कल्याण कुमार वर्मन–**उपप्रधान**, श्री लोकनाथ चौधरी–**उपप्रधान**, श्री तरुण कुमार दास–**मंत्री**, श्री खुशहाल आर्य–**संयुक्त मंत्री**, श्री दीपक आर्य–**उपमंत्री**, श्री प्रमोद अग्रवाल–**उपमंत्री**, श्री सत्यप्रकाश आर्य–**कोषाध्यक्ष**, श्री सोमनाथ आर्य–**अधिष्ठाता आर्य वीर दल**, श्री महेश आर्य–**पुस्तकालयाध्यक्ष**।

ले. कर्नल जगदीश कुमार तलवाड़ प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज सैनिक विहार, दिल्ली के वार्षिक चुनाव में ले. कर्नल जगदीश कुमार तलवाड़–**प्रधान**, श्री सुदेश कुमार खुराना–**महामन्त्री**, श्री सुधाकर शाह गुप्ता–**कोषाध्यक्ष** चुने गये।

श्रीमती ऊषा चावला प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज सुशान्त लोक, डी ब्लॉक, गुड़गांव के वार्षिक निर्वाचन में श्रीमती ऊषा चावला–**प्रधान**, श्री विजय सेठ मंत्री–**उपप्रधान**, श्री सुभाषचन्द्र दुआ–**मंत्री**, श्रीमती ममता मेहतानी–**संयुक्त मंत्री**, श्री भारत सचदेवा–**कोषाध्यक्ष** चुने गये। युवा उद्घोष की ओर से हार्दिक बधाई।

बृजघाट पर आर्य परिवार सम्मेलन

दिनांक 10-11 जून 2011 को पं. प्रकाशवीर शास्त्री भवन आर्य समाज मंदिर बृजघाट जिला गाजियाबाद में आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में आर्य परिवार सम्मेलन का दो दिवसीय आयोजन किया गया। इसमें यज्ञ, भजन व प्रवचन पांच सत्रों में किये गये। भजनोपदेशक श्री आशाराम के भजन, योग मर्मज्ञ पं. रामजीवन व श्री मायाप्रकाश जी के प्रवचन हुए। यज्ञ श्री जयपाल सिंह आर्य ने कराया। कार्यक्रम का समापन आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने अपने प्रेरणाप्रद उद्बोधन के साथ किया। आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री मायाप्रकाश त्यागी ने चारों वेदों का भाष्य भवन अधिष्ठाता श्री जयप्रकाश त्यागी को भेंट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रद्धानन्द शर्मा ने की। भोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था हापुड़ के आर्यों की ओर से की गई। लगभग 100 आर्य परिवारों ने इसमें भाग लिया।

गुरुकुल खेड़ा खुर्द में आवश्यकता है

गुरुकुल खेड़ा खुर्द, दिल्ली-82 में गणित, विज्ञान व अंग्रेजी पढ़ाने में दक्ष एवं गुरुकुल के नियमानुसार दिनचर्या वाले अध्यापकों की आवश्यकता है।

कृपया सम्पर्क करें–**आचार्य सुधांशु,** मो. 9350538952

आर्य समाज सूर्य निकेतन में संगीत संध्या

आर्य समाज, सूर्य निकेतन, विकास मार्ग, दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में सोमवार, 15 अगस्त 2011 को सायं 4 से 7.30 बजे तक श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' की भव्य संगीत संध्या का कार्यक्रम रखा गया है। सभी आर्य जन सपरिवार पधारने की कृपा करें। - ऋषि लंगर रात्रि 7.30 बजे होगा।

भवदीय

यशोवीर आर्य	**विकास गोगिया**	**श्यामसुन्दर ठुकराल**
प्रधान	संयोजक	मन्त्री

क्या आप जिंदगी से थक चुके हैं?

विजेन्द्र कोहली 'गुरुदासपुरी'

स्वास्थ्य ईश्वर का दिव्य वरदान है। जो प्रसन्न और तन्दुरुस्त है वह संसार में रहता हुआ भी स्वर्ग में रह रहा है। अपना काम गुनगुनाते हुए, शांति व धैर्य से करना सफलता की निशानी है। यदि कोई महिला खाना बनाते समय गायत्री मंत्र, गुरुवाणी या किसी भी मंत्र का जाप करे तो वह भोजन निसंदेह सुस्वादु एवं पौष्टिक होगा। प्रसन्नचित्त लोग ज्यादा देर तक जी सकते हैं यह परीक्षित है। जीवन फूलों की सेज नहीं है, फिर भी कष्टों को यदि हंसते-हंसते झेला जाये तो उनकी पीड़ा कम हो जाती है। हंसते-हंसते जीवन जीना भी एक कला है। मानसिक स्वास्थ्य का शारीरिक स्वास्थ्य से गहरा संबंध है। वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि 80 प्रतिशत बीमारियां हमारी बीमार मानसिकता के कारण होती हैं। जीवन शैली जितनी सरल एवं संतुलित हो तो जीना भी सरल, सुरुचिपूर्ण हो जाता है। जीवन चलने का नाम है परंतु विश्राम शरीर की परम आवश्यकता है। कुछ अन्तराल या ब्रेक से जीवन में नवीनता आ जाती है। जीवन निखर उठता है। मांसपेशियां जब थक जाती हैं तो उनमें लेक्टिक तेजाब इकट्ठा हो जाता है। इसे थकावट कहते हैं। जब यह अम्ल धमनियों द्वारा जिगर तक पहुंचता है तो जिगर इसे दोबारा ग्लाइकोजन और ग्लुकोज में परिवर्तित कर देता है। हम इस प्राकृतिक क्रिया द्वारा थकावट से ठीक हो जाते हैं।

दिल से जो सारा जीवन धड़कता रहता है यह भी जितना काम करता है उससे दुगुना समय आराम करता है जिसका हमें पता ही नहीं चलता। इसे दो धड़कनों के बीच का अंतराल कहते हैं।

नींद भी शरीर के स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। यदि मानव 14 दिन तक लगातार नहीं सोये तो वह मर सकता है। सोने से दिमाग और शरीर को शिथिलता प्रदान होती है, टूटी कोशिकाएं जुड़ती हैं। हम सदा जागृत नहीं रह सकते। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन प्रकृति का विधान है।

जीवन में विविधता लाने से जीवन को नीरसता से बचाया जा सकता है। कोई संगीत सुनता है। कोई पेंटिंग करता है। कोई गप्पें मारकर खुश होता है तो किसी को सैर द्वारा आनंद मिलता है। कई लोग घंटों मछली पकड़ने में बिता देते हैं। आराम करने से भी मनोरंजन होता है। जीवन में ब्रेक कभी-कभी लगाएं तो एकरसता, नीरसता भाग जाती है। कई बार पहाड़ पर जाकर नीरसता भाग जाती है। पहाड़ वाले मैदानों में आ जायें। बड़े शहर वाले गांवों में आएं। गांव वाले शहर में घूम आएं तो जीवन में ऊब और थकावट द्वारा उदासी से बचा जा सकता है। [विभूति फीचर्स]

आर्य समाज शान्तिनगर, सोनीपत का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज शान्तिनगर (चार मरला) सोनीपत, हरियाणा का वार्षिक यज्ञोत्सव एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व दिनांक 20 अगस्त 2011 शनिवार से 22 अगस्त 2011 सोमवार तक आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य संदीप आर्य दर्शनाचार्य, प्रवचन आर्य तपस्वी सुखदेव जी आर्य, आचार्य संजय शास्त्री जी याज्ञक, भजनोपदेशक जगत वर्मा जी एवं महात्मा वेदमुनि जी वानप्रस्थी तथा मा. मनोहरलाल जी चावला का मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

श्री कान्ति प्रकाश आर्य प्रधान निर्वाचित

आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली के चुनाव में **संरक्षक**–श्री दुर्गाप्रसाद कालरा, श्री धर्मपाल परमार, श्री ओम प्रकाश भावल, **प्रधान**–कान्तिप्रकाश आर्य, **उपप्रधान**–श्री कृष्णचन्द्र पाहुजा (एडवोकेट) यशपाल भाटिया, श्री विश्वनाथ गुप्ता, श्री रामकृष्ण वर्मा, **मन्त्री**–श्री सोहनलाल मुखी, **उपमन्त्री**– श्री मनोहरलाल चुघ, श्री योगेश गुप्ता, अनिल मदान, श्री गोपाल कृष्ण अरोड़ा, **कोषाध्यक्ष**–हंसराज डुडेजा, **प्रचार मंत्री**–नरेन्द्र कुमार कस्तूरिया, श्री जे.सी. तनेजा, श्री सत्यनारायण गर्ग, सुभाष कोछड़, **सहकोषाध्यक्ष**–विजय कालरा, **पुस्तकालयाध्यक्ष**– जयपाल सिंह आर्य, **संयोजिका**–मधुमालती खरबन्दा, श्रीमती सन्तोष मल्होत्रा, **लेखा निरीक्षक**–नरेश कुमार खन्ना निर्वाचित हुए।

आर्य केन्द्रीय प्रतिनिधि सभा सोनीपत का गठन

मुख्य परामर्शदाता–महात्मा वेदमुनि वानप्रस्थी, **संरक्षक**–मा. चुन्नीलाल जी, **प्रधान**–मा. मनोहरलाल चावला, **कार्यकारी प्रधान**–राजेन्द्र बत्रा, **उपप्रधान**– सुरेन्द्र खुराना, **महामन्त्री**–हरिचन्द स्नेही, **मंत्री**–ज्ञानेश्वर त्यागी, **प्रचार मंत्री**–जसवंत राय आर्य, **कोषाध्यक्ष**–खेमचंद तनेजा, **लेखा निरीक्षक**–जवाहरलाल बत्रा, **वेद प्रचार अधिष्ठाता**–शिवदयाल चुघ चुने गये। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से बधाई।

आर्यसमाज शाहबाद मुहम्मदपुर, दिल्ली का चुनाव सम्पन्न

प्रधान–चौ. जिले सिंह **उपप्रधान**– लोकेश आर्य, **मंत्री**–जगवीर सिंह आर्य, **उपमंत्री**–डॉ. मुकेश सुधीर, **कोषाध्यक्ष**–जयदेव कुमार, **सहकोषाध्यक्ष**–श्रीमती विमला देवी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से बधाई।

आर्यनेत्री अनु चौहान प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज, सीतापुरी, पंखा रोड, नई दिल्ली के निर्वाचन में श्रीमती अनु चौहान–**प्रधान,** श्री मुकेश गुप्ता–**मन्त्री** व श्री राजाराम यादव–**कोषाध्यक्ष** चुने गये।

सुभाष नगर में गुरु विरजानन्द मार्ग का भव्य उद्घाटन

शनिवार, 9 जुलाई 2011, दिल्ली नगर निगम द्वारा 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' के गुरु 'श्री स्वामी विरजानन्द सरस्वती' केनाम से पश्चिमी दिल्ली के सुभाष नगर में कैम्ब्रिज स्कूल के सामने वाले मार्ग का नामकरण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा (नेता विपक्ष, दिल्ली विधानसभा), श्री हरशरण सिंह बल्ली (विधायक), श्रीमती शशि तलवार (पार्षद), श्री सुभाष आर्य (नेता सदन, दि.न.नि.), डॉ. अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, के.आ.यु.प.), श्री जगदीश आर्य, श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, श्री रवि चड्डा, श्री ए.सी. भटनागर, संजीव आर्य, ललित चौधरी, दयानन्द दहिया, अनिरुद्ध शास्त्री आदि ने शुभकामनाएं प्रदान कीं।

नशामुक्त समाज का निर्माण हमें करना है –आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी

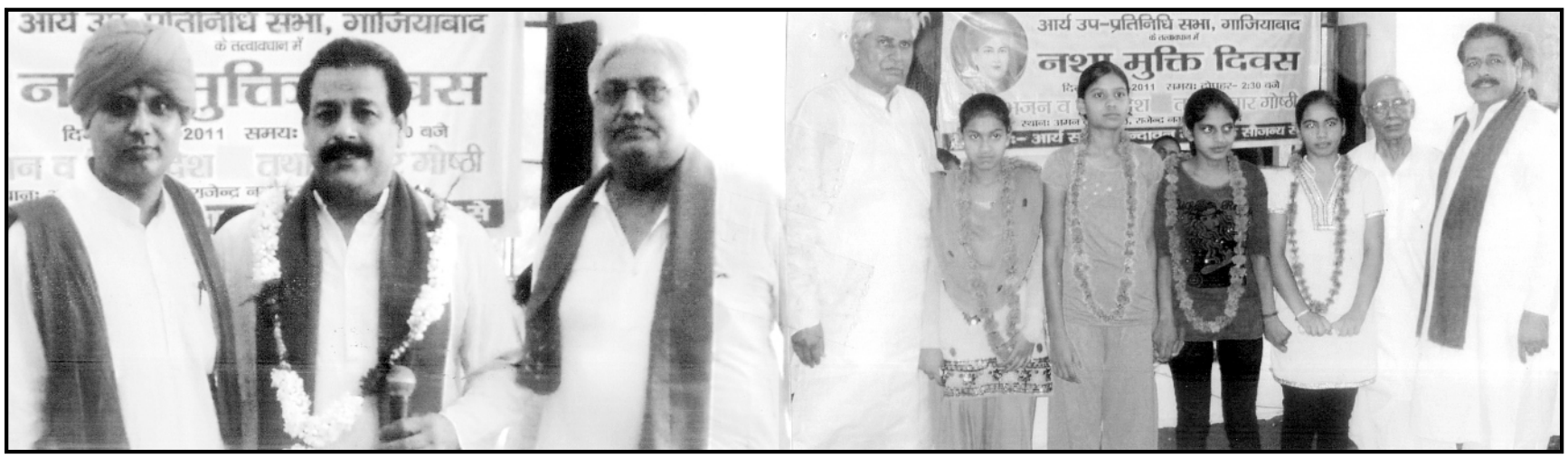

डॉ. अनिल आर्य का स्वागत करते मंत्री श्री सुरेश आर्य व प्रधान श्री प्रमोद चौधरी, दाएं चित्र में भाषण देने वाली बालिकाओं को सम्मानित करते सभा प्रधान श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा व डॉ. अनिल आर्य

रविवार 26 जून 2011, नशा निषेध दिवस पर आर्य उपप्रतिनिधि साहिबाबाद एवं आर्य समाज वृन्दावन गार्डन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना' को सार्थक करते हुए इस आयोजन को किया गया। श्री जयपाल ने यज्ञ सुन्दर तरीके से कराया। आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी ने युवा शक्ति को नशामुक्त होने का आह्वान किया जिसमें कुछ लोगों ने शपथ ली कि वह आजीवन नशा का सेवन नहीं करेंगे। के.आ.यु. परिषद् के डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि मद्यपान से व्यक्ति पापी व अपराधी बन जाता है। आजकल युवकों को शराब पीने की आयु पर बहस को उन्होंने नकार दिया, कहा हमारी संस्कृति में मद्यपान को स्थान ही नहीं फिर आयु कहां से आई।

श्री रामकृष्ण तनेजा पुनः प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1, नई दिल्ली के चुनाव में श्री रामकृष्ण तनेजा **प्रधान**, श्री एस.सी. ग्रोवर **मन्त्री** व श्री अमरनाथ नागपाल **कोषाध्यक्ष** निर्वाचित हुए।

श्री वेदप्रकाश आर्य का भव्य स्वागत

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् पूर्वी दिल्ली के जिला महामन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य के बाबरपुर पूर्वी में नये गृहप्रवेश के शुभावसर पर श्री वेदप्रकाश व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ईसरावती का अभिनन्दन करते परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, श्रीमती प्रवीण आर्या, श्री महेन्द्र भाई जी, श्रीमती सन्तोष देवी, श्री रामकुमार सिंह व यज्ञवीर चौहान अभिनन्दन करते हुए।

श्री आशाराम के मधुर भजनों ने लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र राठी एवं पप्पू पहलवान आदि युवा राजनेताओं ने महर्षि दयानन्द के मार्ग को आनन्ददायक बताया। समारोह अध्यक्ष श्री श्रद्धानन्द शर्मा ने संक्षेप में कहा कि मद्य-मांस का ग्रहण कदापि भूलकर भी न करें। यज्ञ व्यवस्था रमेश आदि ने की। मंच संचालन श्री प्रमोद आर्य ने किया। सुरेश आर्य की मद्यपान की कविता पाठ ने श्रोताओं के रोंगटे खड़े कर दिये। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र आर्य, सत्यप्रकाश आर्य, जगदीश सैनी, सं. गुरमीत सिंह, के.के. यादव, सी.पी. सिंह, एस.के. बजाज, बिजेन्द्र भड़ाना आदि का कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान रहा। श्री प्रवीण आर्य (प्रान्तीय महामन्त्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उ.प्र.), चौधरी सत्यवीर, महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय मन्त्री आदि ने अपने विचार दिये।

गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर में गुरु पूर्णिमा यज्ञ

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर, पंजाब के तत्वावधान में रविवार 15 जुलाई को गुरु पूर्णिमा यज्ञ का आयोजन डॉ. स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, कुलपति गुरुकुल की अध्यक्षता में मनाया गया। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक जी के भजनों पर लोग झूम उठे। संस्था के प्रधान चतुर्भुज मित्तल, देशबन्धु चोपड़ा, प्रिं. अश्विनी कुमार शर्मा, ओम प्रकाश अग्रवाल को सफल आयोजन के लिए हार्दिक बधाई।

आर्य समाज हड़सन लाईन में गायत्री महायज्ञ

आर्यसमाज हड़सन लाईन, गुरु तेगबहादुर नगर, दिल्ली में दिनांक 8 अक्टूबर 2010 से रविवार 10 जुलाई 2011 तक गायत्री मन्त्र से पांच लाख आहुतियां देकर यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी प्रशान्तानन्द सरस्वती के सानिध्य में यज्ञ के ब्रह्मा प्रो. सत्यकाम वेदालंकार ने यज्ञ सम्पन्न कराया। समाज के प्रधान श्री गोपाल आर्य, उपप्रधान श्रीमती कृष्णा पाहवा, मन्त्री वेदप्रकाश सरदाना व कोषाध्यक्षा श्रीमती सुरेश अरोड़ा इस आयोजन के लिए बधाई के पात्र हैं।

शोक समाचार

– वैदिक विद्वान, ओजस्वी वक्ता डॉ. वाचस्पति उपाध्याय का गत दिनों निधन हो गया। उनके निधन से आर्य जगत व शिक्षा जगत को गहरी क्षति हुई है।

– पूर्व सांसद, कांग्रेस नेता व आर्य नेता, सौम्यता की प्रतिमूर्ति श्री रामचन्द्र विकल का 97 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

– आर्य समाज, मानसरोवर पार्क, दिल्ली के कर्मठ सदस्य श्री दीपचन्द गुप्ता का गत दिनों निधन हो गया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की ओर से दिवंगतों के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09312406810